B.A. Part – III
Philosophy Paper – V

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Verification Theory of Religious Language (Part-II)

पुनः एयर ने सत्यापनीयता के दो अन्य सूत्रीकरण के अन्तर्गत सबल सत्यापन (Strong Verification) तथा दुर्बल सत्यापन (Weak Verification) की बात की है। एयर के अनुसार धार्मिक कथन न तो सबल अर्थ में सत्यापनीय है और न ही दुर्बल अर्थ में। वस्तुतः साधारण तौर पर धार्मिक कथनों का सम्बन्ध ईश्वर अथवा आत्मा या इसी प्रकार के कोई भी अन्य अनुभवातीत सत्ता या विषय के साथ होता है। इनका हमारे अनुभव के साथ कभी भी सीधा सम्बन्ध नहीं होता है और न होने की कोई सम्भावना ही है। ऐसी स्थिति में इन्हें अनुभव द्वारा कभी भी सत्यापित अथवा सत्यापनीय नहीं माना जा सकता।

अपने इस विवेचन के आधार पर एयर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि धार्मिक कथनों की सत्यापनीयता सम्भव नहीं है। अब चूँकि इनके अनुसार कथन के अर्थपूर्णता की कसौटी उसका सत्यापनीय होना ही है। अतः इस आधार पर ये अपने दूसरे निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि धार्मिक कथनों के साथ तथ्यात्मक अर्थपूर्णता की बात नहीं की जा सकती।

समीक्षा — किन्तु जब हम इस विषय की ओर अपना ध्यान आकर्षित करते हैं कि क्या एयर अपने निष्कर्ष में पूर्णतः संगत है? यहाँ हम पाते हैं कि एयर का विचार कुछ दोषपूर्ण है। (1) इसका कारण यह है कि (एयर का कहना है) व्यक्ति एक विशेष अभिवृत्ति से संचालित होने के कारण ही धार्मिक बनते हैं। धर्म के विषयों जैसे — 'ईश्वर' से वह एक विशेष रूप से प्रभावित होता है तथा उसी के आधार पर अपने जीवन को दिशा प्रदान करता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय है कि किसी वस्तु के द्वारा एक खास प्रकार से प्रभावित होना बिल्कुल एक आत्मनिष्ठ भावना अथवा संवर्ग में लिपटे रहना नहीं है, बल्कि एक अनुभूति को प्राप्त करना है जिसके पीछे वस्तुनिष्ठ आधार है। धर्म के विषय जैसे कि 'ईश्वर' का एक पूर्णतः वस्तुनिष्ठ सर्वव्याप्त गुण के रूप में अनुभव करते हैं धार्मिक व्यक्ति ऐसा कहता है कि —
"विश्व में एक ईश्वर है", "वह सर्वव्याप्त है" अथवा "समस्त विश्व ईश्वरमय है" इत्यादि। अब चूँकि ईश्वर पूर्णतः वस्तुनिष्ठ रूप से विश्व में व्याप्त नजर आता है इसलिए धार्मिक व्यक्ति ईश्वर सम्बन्धी कथनों को बिल्कुल तथ्यात्मक कथनों के रूप में व्यक्त करता है लेकिन यहाँ हमें ध्यान रखना होगा कि ईश्वर की तथ्यात्मकता साधारण कथनों के तथ्यात्मकता से बिल्कुल भिन्न है। अतः हमें बार-बार यह भी संकेत करता है कि ईश्वर सम्बन्धी कथनों से तात्पर्य हमें साधारण तथ्यात्मक कथनों के रूप में नहीं लेना चाहिए। ईश्वर वस्तुतः अनेक तथ्यों के

बीच कोई एक तथ्य नहीं है बल्कि यह तो सभी तथ्यों में व्याप्त एक सर्वांगिण धर्म है। इसलिए समीक्षकों ने माना है कि धार्मिक व्यक्ति के कथनों में कहीं कोई धोखा अथवा भ्रम नहीं है। इनके विचार में हरदम भ्रम तो एयर जैसे वे धर्म विचारक पैदा करते हैं, जो धार्मिक कथनों की तुलना तथ्यात्मक कथनों से करने लगते हैं कि धार्मिक कथनों की सत्यता - असत्यता उसी प्रकार निर्धारित की जा सकती है, जिस प्रकार अन्य तथ्यात्मक कथनों की। वस्तुतः समीक्षकों की राय में धार्मिक व्यक्ति धार्मिक कथनों का बिल्कुल तथ्यात्मक प्रयोग कर तथा फिर उसे वस्तुनिष्ठ मानने में कोई विरोध पैदा नहीं करता। वह वास्तव में 'वस्तुनिष्ठ तथ्यात्मक' है यह ठीक है। धार्मिक कथनों का वह साधारण तथ्यात्मक अर्थ में प्रयोग करता ही नहीं और इसलिए तथ्यात्मकता की उपर्युक्त सत्यापनीयता की कसौटी पर उसके खरे उतरने का भी कोई प्रश्न नहीं है।

— TO be continued —